22112304

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Friday 13 May 2011 (afternoon)
Vendredi 13 mai 2011 (après-midi)
Viernes 13 de mayo de 2011 (tarde)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'Épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

© International Baccalaureate Organization 2011

https://xtremepape.rs/

पाठांश क

वरिष्ठ कथाकार अमरकांत से बातचीत

पुरस्कार, सम्मान भला किसे नहीं अच्छा लगता लेकिन एक ज़मीनी लेखक उस हासिल के आनंद में बहने की बजाय उसका आस्वादन करता है। उससे प्रतिबिंबित चुनौतियों और ज़िम्मेदारियों की गरिमा को महसूस करता है। क्योंकि लेखन उसका लक्ष्य होता है और आत्मावलोकन का ज़रिया भी। कथाकार अमरकांत से बातचीत की है अखिलेश मिश्र ने।

❶ **बचपन में आपने किसकी प्रेरणा से लेखन कार्य आरम्भ किया और इसमें कितने सफल रहे?**
स्कूली पढ़ाई के दौरान हिंदी अध्यापक गणेश प्रसाद ने हम छात्रों से हस्तलिखित पत्रिका निकालने को कहा। हम छात्रों ने स्वयं लिखकर मोहल्ले में पत्रिका निकली। इस प्रकार हमें लेखन की ओर उन्मुख करने वाले शिक्षक गणेश प्रसाद थे। हाईस्कूल में पढ़ाई के दौरान ही दो कहानियां लिखीं, यह कड़ी आगे बढ़ती रही और मैं कहानीकार बन गया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में जब पढ़ने आया तब भी हम लोगों ने एक पत्रिका के दो अंक निकले थे।

❷ **लम्बे लेखन करियर में उम्र के इस पड़ाव में आपको दो साल के अन्दर दो बड़े पुरस्कार मिले। इस पर आपको क्या कहना है?**
सम्मान के लिए मैंने कोई लेखन नहीं किया। सम्मान पाकर किसी भी रचनाकार को संतुष्ट नहीं होना चाहिए। लेखक अपनी उम्र के इस पड़ाव पर आकर रचना कर रहा है तो वह भी किसी पुरस्कार से कम नहीं हैं।

❸ **आपके दौर में पत्रकारिता एक मिशन थी। आज की पत्रकारिता को आप किस रूप में देखते हैं?**
उस समय पैसे बहुत कम मिलते थे। ख़बरों को लेकर आज-जैसी भागमभाग नहीं थी। आजकल तो संपादक से लेकर रिपोटर को शर्तों पर रखा जाता है। ऐसा पत्रकार कैसे देश-समाज का भला करेगा।

❹ **लेखन के साथ आपने पत्रकारिता में लम्बा समय व्यतीत किया। दोनों काम कैसे चलते रहे?**
जिस दौर में हम रोज़गार की तलाश कर रहे थे वह गुलामी के दौर से मुक्ति के बाद का ज़माना था। उस समय मैं सरकारी काम के बंधन में नहीं पड़ना चाहता था। इसीलिए पत्रकारिता में हाथ आजमाने की सोची। आगरा में तीन वर्ष काम करने के बाद इलाहाबाद लौट आया। यहाँ मैंने 'अमृत पत्रिका' में सब एडिटर के रूप में काम किया।

❺ **आज साहित्य खेमों में बंटा है। आपके समय भी ऐसी बातें थी?**
मत-मतान्तर तो हर दौर में चलते रहते हैं। इलाहाबाद में भी पुराने दौर में साहित्यकारों के दो गुट थे। इन अलग गुटों के बाद भी लोग आपस में मिलते थे। आज के दौर में तो एक गुट दूसरे को काटने पर आमादा है। धन का मूल्य प्रभावी हुआ है।

❻ **वर्तमान दौर में किस प्रकार का रचनाकर्म हो रहा है। यह दौर रचना के लिहाज़ से कैसा है?**
आज रचनाकार हर क्षेत्र में आगे बढ़कर प्रतिनिधित्व कर रहा है। आज के रचनाकारों को सशक्त आलोचकों की आवश्यकता है। अच्छे आलोचक नहीं होने से रचनाकारों को परखा नहीं जा सका है। अच्छे आलोचक की कमी से मज़बूत रचनाकार सामने नहीं आ रहे हैं।

https://xtremepape.rs/

पाठांश ख

पक्के इरादों की नहर

मध्य प्रदेश के आदिवासी इलाके का यों तो यह अनजाना-सा हिस्सा है, मगर यहाँ के किसानों ने जो कुछ किया है वह वाकई आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम है। खरगोन जिले के झागाड़ी गाँव के किसानो के द्वारा बनाई गई दो छोटी नहरें इस बात का प्रमाण हैं कि इरादे पक्के हों तो क्या नहीं किया जा सकता। प्रदेश के पश्चिमी किनारे पर महाराष्ट्र से सटे इस क्षेत्र में पड़ने वाली गरमी खेती पर निर्भर यहाँ की अर्थव्यवस्था के लिए अभिशाप बनी हुई थी। मगर गाँव के किसानो ने हालात को पूरी तरह बदलने की ठान ली थी।

उन्हें ये मौका मिला पिछले वर्ष सितम्बर में जब गाँव के नज़दीक बहने वाली इन्द्रावती नदी पर एक बाँध बनाने के लिए अर्ध शासकीय संस्था ने एक समिति का गठन किया। इस बाँध में पानी एकत्र किया जाना था और फिर पम्पों के ज़रिये इसे खेतों तक ले जाया जाना था। जागरूक गाँववाले फ़ौरन इस संभावित खतरे को समझ गए। दरअसल, पम्प से पानी खींचने का मतलब था बिजली या डीज़ल के खर्च में बढ़ोतरी। सो, उन्होंने अमूमन पानी का सस्ता ज़रिया मानी जाने वाली नहर बनाने का फैसला कर डाला।

इसके बाद ग्रामीणों ने अपनी खुद की ज़मीन से नहरों के लिए रास्ता निकालने और वन क्षेत्र को खाली करने का फैसला किया। कई किसानों ने तो गाँव के इस व्यापक हित में अपनी ज़मीन का कुछ हिस्सा भी छोड़ दिया। नदी के किनारे बसा यह वन ग्राम अब इसके दोनों किनारों से निकली दो नहरों से आबाद हो रहा है। 3.5 किमी और 1.3 किमी लम्बी ये दो नहरें 27 किसानो के खेतो की सिंचाई कर रही हैं। एमजेएपी के ज़िला समन्वयक सुशील बरुआ कहते हैं, "गाँववालो ने नहरों की खुदाई से संबंधित ज़मीन की ढलान और नहर की रूपरेखा आदि से संबंधित तकनीकी पहलुओं का आकलन खुद ही किया। और यह सारा काम श्रमदान के ज़रिये पूरा किया गया।"

यह सब इसलिए संभव हो सका क्योंकि आदिवासी समुदाय मिल-जुलकर रहते आए हैं। उन्होंने न केवल नहरों के निर्माण के लिए ईमानदारी से प्रयास किया बल्कि यथोचित तरीके से पानी का बंटवारा भी कर रहे हैं। पानी की नियमित और विश्वसनीय आपूर्ति के नतीजे भी अब दिखने लगे हैं। समिति के प्रमुख 27 वर्षीय भूमन सिंह दाबर कहते हैं, " इस साल रबी की फसल जैसी हुई है वैसी पहले कभी नहीं हुई थी।" वाकई यह एक अनुकरणीय कहानी है, जिसने इस गाँव को गर्व से भर दिया है।

https://xtremepape.rs/

पाठांश ग

कल्पवृक्ष

[– X –]

“पापा चाय” नेहा के इन शब्दों से जैसे पापा की तंद्रा भंग हुई। बगीचे में पौधों को पानी देते हुए वे नेहा के बारे में ही सोच रहे थे। अच्छा सा घर, वर देखकर शादी तय तो कर दी है उन्होने, लेकिन उनकी सुन्दर, सुशील गुड़िया, जो घर-परिवार और दोस्तों सभी में बहुत प्रिय है, उसे जैसे किस्मत के ही हवाले कर रहे हों, ऐसा उन्हे लग रहा था। यद्यपि अपनी ओर से पूर्णतः निश्चिंत होने तक जानकारी ली थी उन्होने वर पक्ष की, किंतु फिर भी…। इस ‘फिर भी’ को एक पिता ही समझ सकता है शायद…।

[– 1 –]

उन्होने बहुत प्यार से नेहा की तरफ देखा, उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में कुछ अजीब-सा भाव देखा आज और पूछ ही लिया, “तू…। खुश तो है ना बेटा?” “हाँ पापा।” नेहा ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया। फिर नेहा ने ही बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, “पापा ये पेड़ हम यहाँ से उखाड़ कर पीछे वाले बगीचे में लगा दें तो?” पापा कुछ असमंजस में पड़ गए, बोले, “बेटे ये चार साल पुराना पेड़ है अब कैसे उखड़ेगा और अगर उखड़ भी गया तो दुबारा नई जगह, नई मिट्टी को बरदाश्त कर पाएगा? कहीं मुरझा गया तो?”

[– 2 –]

नेहा ने एक मासूम-सा सवाल किया, “पापा एक पौधा और भी तो आपके आँगन का नए परिवेश में जा रहा है ना, नई मिट्टी, नई खाद में क्या ढल पाएगा? क्या पर्याप्त रोशनी होगी आपके पौधे के पास? आप तो महज़ चार सालों की बात कर रहें हैं ये तो बाईस साल पुराना पेड़ है ना…।”

[– 3 –]

कहकर नेहा अंदर जाने लगी और पापा सोचने लगे उन रीति रिवाज़ों के बारे में जो दिल के टुकड़ों को अपनों से जुदा कर देते हैं। सचमुच ईश्वर ही इन्हें प्रेरणा देते हैं नए माहौल में ढलने की और वही इन्हे शक्ति भी देते हैं सहने की। यह पौधा नए परिवेश में भी ना सिर्फ पनपता है, बल्कि, खुद नए माहौल में ढलकर औरों को सब कुछ देता है, ताउम्र औरों के लिए जीता है। क्या सच में, यही ‘कल्पवृक्ष’* होता है?

---

* कल्पवृक्षः एक पौराणिक पेड़ जो मनोकामना पूरी करे

https://xtremepape.rs/

पाठांश घ

इंटरनेट की दुनिया में हिंदी का भविष्य

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में दुनिया बहुत तेज़ी से सिकुड़ती और पास आती जा रही है। इस प्रक्रिया में इंटरनेट की भूमिका असंदिग्ध है। हिंदी के वेबसाइटों की संख्या जिस अनुपात में बढ़ रही है उसी अनुपात में इसके पाठकों की संख्या भी बढ़ रही है। लेकिन हिंदी को नेट पर बहुत लम्बा सफर तय करना है। इसके मार्ग में अनेक तकनीकी बाधाएँ हैं।

हिंदी के सैंकड़ों फॉण्ट उपलब्ध हैं और यही समस्या की असली जड़ है। अंग्रेजी के 'टाइम्ज़ न्यू रोमन' की तरह हिंदी में कोई वैश्विक फॉण्ट नहीं है कि सभी हिंदी भाषी एक ही फॉण्ट पर काम कर सकें। जहाँ दुनिया भर में पाठकों की संख्या का ग्राफ नीचे आया है, वहीं सूचना क्रांति को किताब पर छाए खतरे के रूप में भी देखा जा रहा है। इंटरनेट पर साहित्य उपलब्ध होने से कुछ विधा सम्बन्धी परिवर्तन आना तय है। अब प्रश्न उठता है कि क्या इंटरनेट पर गंभीर साहित्य की रचना संभव है या फिर यह सिर्फ पॉपुलर साहित्य तक ही सीमित रह जाएगा, इस प्रश्न का उत्तर भविष्य ही दे सकता है। दरअसल की-बोर्ड मैपींग (एक ऐसी मानक तालिका निर्धारित करना, जिसमें प्रत्येक अक्षर, अंक और चिह्न के लिए तयशुदा मानक हो) के मूल में ही फॉण्ट की समस्या विद्यमान है। अंग्रेज़ी में भले ही फॉण्ट अलग अलग हैं लेकिन की-बोर्ड एक ही है। असल में हिंदी का की-बोर्ड बनाते समय मानक का निर्धारण और पालन नहीं किया गया। बहुत सारे निजी प्रयास होने और कोई तयशुदा मानक न होने के कारण अराजकता की स्थिति बनी है। यू.आर.एल.एड्रेस भी हिंदी में इंटरनेट के इस सफ़र में एक विकट समस्या उत्पन्न कर रहा है। जब तक यू.आर.एल.एड्रेस और इंटरनेट सम्बन्धी अन्य तकनीकी चीज़ें हिंदी में नहीं होंगी तब तक अंग्रेजी जानने वाले बहुसंख्यक हिंदी भाषी इससे नहीं जुड़ेंगे। इंटरनेट का एक बड़ा ही दिलचस्प आयाम 'सर्च इंजन' है। विडंबना बस यही है कि सूचना क्रांति के दूसरे दौर में प्रवेश हो जाने के बावजूद हिंदी में एक भी सर्च इंजन नहीं है। जबतक हिंदी का अपना विशाल डेटाबेस नहीं बन जाता, तब तक सर्च इंजन में अनुवाद की सुविधा देने वाले सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जा सकता है। हिंदी के वेबसाइटों पर गौर करें तो ख़ासे दिलचस्प परिणाम सामने आते हैं। इन वेबसाइटों की अंग्रेजी के वेबसाइटों से तुलना करें तो ये पता चलता है कि हिंदी की वेबसाइटें दरअसल पूरी तरह विकसित नहीं हुई हैं। इंटरनेट पर मुख्यतः पांच प्रकार की वेबसाइटें उपलब्ध हैं। अप्रवासी भारतीयों और भारत में निवास करने वालो लोगों की निजी वेबसाइटें जिनमे हिंदी प्रेम तो झलकता है पर स्तरीयता की कमी है। गैर सरकारी संगठनों, विदेशी विश्वविद्यालयों और स्वामियों मठाधीशों की वेबसाइटें चूँकि एक खास उद्देश्य को लेकर ही बनाई जाती हैं, इसलिए इनका पाठक वर्ग भी विशिष्ट या अलग प्रकार का होता है। सरकारी वेबसाइटों पर उपलब्ध अधिकांश जानकारियाँ भी अंग्रेजी में हैं।

एक बार भाषा फिर निर्णायक रूप में बदल रही है। हम एक ऐसे बिंदु पर खड़े हैं, जहाँ हमें भाषा की ताकत और कमजोरियों के सवाल का सामना करना होगा। पत्रिकाओं (साहित्यिक और गैर साहित्यिक), अखबारों, टीवी चैनलों और सिनेमा संबंधी वेबसाइट जानकारी विहीन है जिस पर बुद्धिजीवी वर्ग सवाल खड़े करते रहे हैं। हम मीडिया में हिंदी के बढ़ावे को लेकर खुश तो हो रहे हैं पर स्तिथि की गहराई पर विचार नहीं कर रहे- इसका अर्थ है जनता को लगातार एक ऐसी भाषा में बनाये रखना, जिसमें ज्ञान नहीं, दैनिक सूचनाएं अधिक हों। कुल मिलकर यह कह सकते हैं कि इंटरनेट पर ऐसी वेबसाइटें बहुतायत में हैं जो हिंदी के ई-पाठक के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। ज़रूरत है बस इन वेबसाइटों के बारे में जानकारी की।

https://xtremepape.rs/